Notes UNIT-3 CONCEPT OF GEOGRAPHY

1. Geography in the description of the Earth
भूगोल पृथ्वी तल के अध्ययन के रूप में :-

भूगोल को 'पृथ्वी का वर्णन करना' माना जाता है, पृथ्वी तल (Earth Surface) शब्द का भूगोल में इतना प्रयोग होता है कि इसके स्थान पर अन्य शब्द का प्रयोग उचित नहीं लगता है। पृथ्वी और उसके धरातल पर होने वाले परिवर्तनों और मानव क्रियाकलापों का अध्ययन भूगोल में किया जाता है। सृष्टि के रचयिता ईश्वर है तथा भूगोल का रचयिता मानव है, अतः स्पष्ट है कि भूगोल का उद्देश्य मानव के सन्दर्भ में पृथ्वी का अध्ययन करना है। यह अध्ययन अत्यन्त व्यापक होता है। इसमें सृष्टि का प्रारंभ, भूत, वर्तमान एवं भविष्य सभी सम्मिलित होते हैं क्योंकि मानवीय क्रियाएं एवं पृथ्वी का वह भाग जिस पर वह अपनी क्रियाएं संचालित करता है, न केवल पृथ्वी के वरन् ब्रह्माण्ड की उत्पति से जुड़े है।

भूगोल के अन्तर्गत सभी स्थलखण्ड, जलमंडल और वायुमंडल में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। सौरमंडल, पृथ्वी पर सूर्य और चन्द्रमा के प्रभावों का भी उल्लेख होता है। पृथ्वी के आंतरिक भाग की संरचना और उसमे होने वाले हलचलों आदि का भी अध्ययन इसी विज्ञान में किया जाता है। अतः भूगोल की प्रकृति पृथ्वी की सतह का अध्ययन करना है।

Notes

2. Study of Landscape-Physical and Cultural.

भूगोल प्रादेशिक विभिन्नताओं के अध्ययन के रूप में:-

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भूगोलवेत्ताओं ने प्रदेश की संकल्पना का प्रतिपादन किया और भौगोलिक अध्ययन हेतु विश्व और अन्य भू-खण्डों को प्रदेशों में विभाजित किया। प्रदेश एक ऐसा क्षेत्र होता है, जिसकी विशिष्ट अवस्थिति होती है, जो किसी प्रकार से दूसरे क्षेत्रों से प्रभेदक (Distinctive) होता है, तथा जो उतनी ही दूरी तक फैला होता है, जितनी दूरी तक वह प्रभेदक व्याप्त होता है। भूगोल में प्रदेशों के अध्ययन, प्रदेशों के वर्गीकरण की विधियों और प्रदेशों के विश्लेषण-संश्लेषण पर अधिकाधिक बल दिया जाता है। इस प्रकार प्रादेशिक विभिन्नताओं और समानताओं के अध्ययन की शृंखला प्रारंभ हुई और भूगोल को प्रादेशिक विभिन्नताओं का अध्ययन माना जाता है।

3. Science of Distribution On Earth:-

भूगोल वितरणों के विज्ञान के रूप में:-

भूगोल के अध्ययन में सामान्यतया पृथ्वी तल पर विभिन्न स्थानों, वस्तुओं और तथ्यों के वितरण को समाहित किया जाता है अर्थात् भूगोल में पृथ्वी की सतह पर स्थित तथ्यों के वितरण

Notes

प्रतिरूपों का अध्ययन किया जाता है। वितरण प्रतिरूपों को मानचित्र में प्रदर्शित कर समझाया जाता है। इसके अलावा वितरण प्रतिरूपों को समझना और उनकी तुलनात्मक विवेचना करना आवश्यक है।

4. Study of the Earth as the home of man and the interaction between man and his Environment.

भूगोल पर्यावरण एवं पारिस्थितिक विज्ञान के रूप में :-

पर्यावरण और उसके द्वारा परिवर्तनों का अध्ययन भूगोल का एक महत्वपूर्ण अंग है। मानव और पर्यावरण के मध्य उनके सम्बंधों का अध्ययन प्राचीन काल से ही भूगोल में होता रहा है।

भूगोल के अध्ययन में अनेक विद्वानों ने इस बात पर सदैव बल दिया है कि प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण मानव को प्रभावित करता है, जिसके फलस्वरूप उसके क्रियाकलाप, खान-पान रहन-सहन, वेश-भूषा, निवास स्थल, स्वभाव और रीति-रिवाज़ को प्रभावित करता है।

भूगोल के अन्तर्गत पृथ्वी के तल और उस पर पायी जाने वाली क्षेत्रीय भिन्नता का अध्ययन मानवीय निवास के रूप में किया जाता है। इसलिए

भूगोल के अध्ययन क्षेत्र भूतल के अन्तर्गत पृथ्वी की सतह के साथ ही उस क्षेत्र को भी समाहित किया जाता है, जो मानव से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। मनुष्य की जानकारी भूगर्भशास्त्र और अंतरिक्ष विज्ञान के अन्तर्गत मनुष्य की जानकारी इन क्षेत्रों के विषय में अत्यंत सीमित होती है और ये भूगोल की परिधि से बाहर रखे जाते हैं। विभिन्न प्रकार की भौगोलिक सूचनाएं मानव को लाभ पहुंचाने के लिए, उसके ज्ञान वृद्धि के लिए और अंतत: जनहित या मानव कल्याण के लिए एकत्र की जाती है और विभिन्न दृष्टिकोणों से उनकी व्याख्या की जाती है

मानव-पर्यावरण संबंध का विश्लेषण :-
Man-Environment Relationship :-

भूतल पर भौतिक, जैविक और मानवीय सभी प्रकार के तथ्य पाये जाते है, जो परस्पर संबंधित होते है, पर्यावरण का अभिप्राय उन दशाओं से है जो मनुष्य के चारों ओर व्याप्त होती है और मनुष्य को प्रभावित करती है। मनुष्य पृथ्वी के जिस भी भाग में रहे वे, वहाँ के पर्यावरण से प्रभावित हो जाता है, यह प्रभाव उसके कार्यक्षमता, व्यवसाय, भोजन, पोशाक, संस्कृति आदि को प्रभावित करता है। वर्तमान काल में हम पृथ्वी के तल पर जो गृह नगर, ग्राम, खेत, सड़क इत्यादि दिखते है, वे मानव द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण में परिवर्तन के ही परिणाम है

Notes

इन्हें सांस्कृतिक भूदृश्य (cultural landscape) कहते है. मानव पर्यावरण के मध्य स्थापित इन्ही पारस्परिक संबंधो की व्याख्या करना भूगोल का मुख्य लक्ष्य है। इस प्रकार भूगोल का मुख्य उद्देश्य स्थानिक वितरणों और स्थानिक संबंधो के दृष्टिकोण से मानव पर्यावरण संबंध का अध्ययन करना है। भूगोलवेता का लक्ष्य प्राकृतिक पर्यावरण और समस्त मानव जाति के पारस्परिक क्रिया - प्रतिक्रिया प्रणाली को समझना और पार्थिव एकता की व्याख्या करना है। इस प्रकार भूगोल को एक अन्तर्विषयी विज्ञान का स्वरूप प्राप्त होता है।